وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا

اور اللہ کی رسی کو مل کر مضبوطی سے
تھام لو اور تفرقے میں مت پڑو

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

کہہ دو کہ اگر تم اللہ سے محبت رکھتے ہو تو میری
پیروی کرو اللہ تم سے محبت کرے گا۔

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ



# تعلیم مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

# قاعدہ

# مرکز المصطفیٰ ﷺ



اَعُوذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ

الْاُمِّیِّ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا

یَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِیْثُ

# تختی نمبر اوّل (۱) حُروفِ مُفرَدات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ا | با ب | تا ت | ثا ث | ج |
| حا ح | خا خ | د | ذ | را ر |
| زا ز | س | ش | ص | ض |
| طا ط | ظا ظ | ع | غ | فا ف |
| ق | ک | ل | م | ن |
| واؤ و | ہا ہ | ء | یا ی | یا ے |

# تختی نمبر دوم (۲) حُروفِ مُرکّبات

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ا | لا | لا | با | لا |
| ل | لا | لح | لا | بلب |
| ک | ك | کب | لُب | کا |
| کا | بکت | تلُث | ب | ت |
| ث | ن | ی | با | نا |
| تا | یا | ثا | بس | یس |
| نس | تس | ثس | ثج | تح |
| نخ | یح | بج | یم | بم |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| نم | تم | ثم | بی | یی |
| نی | تی | ثی | نبل | تنل |
| بیل | یتل | ثثل | نبن | بنن |
| تین | یتن | ثثن | ج | ح |
| خ | حث | خب | جت | تحت |
| یجب | بخت | ة | ہ | بة |
| یہ | تہ | نة | ھ | یہب |
| بہا | بہم | د | ذ | جد |
| خذ | ر | ز | جر | خز |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| س | تز | ير | ز | ر |
| ض | ص | شل | سل | ش |
| ضا | طب | صب | ظ | ط |
| عز | ء | غ | ع | ظا |
| تغذ | بعد | ضغ | صع | غر |
| ق | ف | ئ | ؤ | أ |
| قفل | فقل | فو | قو | و |
| لم | حم | م | م | يف |
| | تمت | | تم | |

## تختی نمبر سوم (۳) حروفِ مُقطّعات

حروفِ مُقطّعات کا طلبہ کو حفظ کرا دینا موجبِ برکت ہے

| | | | |
|---|---|---|---|
| الٓمّٓ | الٓمّٓصٓ | الٓرٰ | الٓمّٓرٰ |
| کٓهٰیٰعٓصٓ | | طٰهٰ | طٰسٓمّٓ |
| طٰسٓ | یٰسٓ | صٓ | حٰمٓ |
| حٰمٓ عٓسٓقٓ | | قٓ | نٓ |

مُرکّبات کی تقطیع ختم کر کے طلبہ کو اتنی استعداد ہو جانی چاہیے کہ قرآنِ مجید میں کسی جگہ سے دریافت کرنے پر حرفوں کے نام بلا تامل بتا سکیں عَمَّ یَتَسَآءَلُوْنَ کو اِس طرح بتلائیں: ع م ی ت س ا ء ل و ن ۔ یہ سوال بھی کیا جائے کہ کہاں سے کہاں تک کون سا حرف ہے۔

## تختی نمبر چہارم (۴) حرکات

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَ | اِ | اُ | هَ | هِ | هُ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| حُ | حِ | حَ | عُ | عِ | عَ |
| خُ | خِ | خَ | غُ | غِ | غَ |
| كُ | كِ | كَ | قُ | قِ | قَ |
| شُ | شِ | شَ | جُ | جِ | جَ |
| ضُ | ضِ | ضَ | ىُ | يِ | ىَ |
| نُ | نِ | نَ | لُ | لِ | لَ |
| طُ | طِ | طَ | رُ | رِ | رَ |
| تُ | تِ | تَ | دُ | دِ | دَ |
| سُ | سِ | سَ | صُ | صِ | صَ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| زَ | زِ | زُ | ظَ | ظِ | ظُ |
| ذَ | ذِ | ذُ | ثَ | ثِ | ثُ |
| فَ | فِ | فُ | وَ | وِ | وُ |
| بَ | بِ | بُ | مَ | مِ | مُ |

## تختی نمبر پنجم (۵) تنوین

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مًا | مٍ | مٌ | بًا | بٍ | بٌ |
| وًا | وٍ | وٌ | فًا | فٍ | فٌ |
| ثًا | ثٍ | ثٌ | ذًی | ذٍ | ذٌ |
| ظًا | ظٍ | ظٌ | زًا | زٍ | زٌ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| صٌ | صٍ | صًا | سٌ | سٍ | سًا |
| دٌ | دٍ | دًى | تٌ | تٍ | ةً |
| رٌ | رٍ | رًا | طٌ | طٍ | طًا |
| لٌ | لٍ | لًا | نٌ | نٍ | نًا |
| ىٌ | يٍ | يًا | ضٌ | ضٍ | ضًا |
| جٌ | جٍ | جًا | شٌ | شٍ | شًا |
| قٌ | قٍ | قًا | كٌ | كٍ | كًا |
| غٌ | غٍ | غًا | خٌ | خٍ | خًا |
| عٌ | عٍ | عًا | حٌ | حٍ | حًا |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| هًا | هٍ | هٌ | ءً | ءٍ | ءٌ |

حُرُوفِ حلقی : أ ھ ع ح غ خ ✧ حُرُوفِ شفوی : ف و ب م ✧

حُرُوفِ وسطی : ق ك ج ش ی ض ل ن ر ط د ت ص س ز ظ ذ ث ✧

## تختی نمبر ششم (٦) مشق حرکات وتنوین

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اَبَدًا | اَحَدٌ | اَخَذَ | اٰذِنَ | اَمَرَ |
| اَنَا (پڑا نون) | بَخِلَ | بَرَرَةٍ | جَعَلَ | جَمَعَ |
| حَسَدَ | حَشَرَ | خَشِيَ | خَلَقَ | خُلِقَ |
| ذَكَرَ | رَفَعَ | رَقَبَةٍ | سُرُرٌ | سَفَرَةٍ |
| صُحُفًا | وَسَطًا | طَبَقٍ | طَبَقًا | طُوًى |
| عَبَسَ | عَدَلَ | عَلَقٍ | عَمَدٍ | عِنَبًا |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| غَبَرَةٌ | فَعَلَ | قَتَرَةٌ | قُتِلَ | قَدَرَ |
| قُرِئَ | قَسَمٌ | كَبَدٍ | كُتُبٌ | كَسَبَ |
| كَفَرَ | كُفُوًا | لُبَدًا | لُمَزَةٍ | لَهَبٍ |
| مَسَدٍ | نَخِرَةً | وَجَدَ | وَسَقَ | وَقَبَ |
| وَلَدَ | وَهَبَ | هُمَزَةٍ | هُدًى | |

## تختی نمبر ہفتم (۷) کھڑی زبر، کھڑی زیر، اُلٹا پیش

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بٰ | یٰ | رٰ | مٰ | لٰ | وٰ |
| نٰ | ءٰ | هٰ | عٰ | حٰ | غٰ |
| خٰ | تٰ | ثٰ | جٰ | دٰ | ذٰ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| زٰ | سٰ | شٰ | صٰ | ضٰ | طٰ |
| ظٰ | فٰ | قٰ | كٰ | اٰ | ھٖ |
| | وٗ | ہٗ | ءٗ | | |

حُرُوفِ ابدال یا اِقلاب: بۡ ❖ یرملون: یۡ رۡ مۡ لۡ وۡ نۡ ❖ اِظہار: ءۡ ھۡ عۡ حۡ غۡ خۡ
اِخفاء: تۡ ثۡ جۡ دۡ ذۡ زۡ سۡ شۡ صۡ ضۡ طۡ ظۡ فۡ قۡ كۡ ❖

## تختی نمبر ہشتم (۸) مدّ و لین

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بَا | بُوْا | بِیْ | تَا | تُوْا | تِیْ |
| ثَا | ثُوْا | ثِیْ | حَا | حُوْا | حِیْ |
| خَا | خُوْا | خِیْ | رَا | رُوْا | رِیْ |
| زَا | زُوْا | زِیْ | طَا | طُوْا | طِیْ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ظَا | ظُوْا | ظِیْ | فَا | فُوْا | فِیْ |
| هَا | هُوْا | هِیْ | یَا | یُوْا | یِیْ |
| ءَا | أُوْا | إِیْ | جَا | جُوْا | جِیْ |
| دَا | دُوْا | دِیْ | ذَا | ذُوْا | ذِیْ |
| سَا | سُوْا | سِیْ | شَا | شُوْا | شِیْ |
| صَا | صُوْا | صِیْ | ضَا | ضُوْا | ضِیْ |
| عَا | عُوْا | عِیْ | غَا | غُوْا | غِیْ |
| قَا | قُوْا | قِیْ | کَا | کُوْا | کِیْ |
| لَا | لُوْا | لِیْ | مَا | مُوْا | مِیْ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وِیْ | وُوْا | وَا | نِیْ | نُوْا | نَا |
| دَیْ | دَوْ | ثَیْ | ثَوْ | تَیْ | تَوْ لین |
| زَیْ | زَوْ | رَیْ | رَوْ | ذَیْ | ذَوْ |
| صَیْ | صَوْ | شَیْ | شَوْ | سَیْ | سَوْ |
| ظَیْ | ظَوْ | طَیْ | طَوْ | ضَیْ | ضَوْ |
| اَیْ | اَوْ | نَیْ | نَوْ | لَیْ | لَوْ |
| حَیْ | حَوْ | جَیْ | جَوْ | بَیْ | بَوْ |
| غَیْ | غَوْ | عَیْ | عَوْ | خَیْ | خَوْ |
| کَیْ | کَوْ | قَیْ | قَوْ | فَیْ | فَوْ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مَوْ | مَیْ | وَوْ | وَیْ | هَوْ | هَیْ |
| | | یَوْ | یَیْ | | |

حُرُوفِ شمسی : تْ ثْ دْ ذْ رْ زْ سْ شْ صْ ضْ طْ ظْ لْ نْ ٭

حُرُوفِ قمری : اْ بْ جْ حْ خْ عْ غْ فْ قْ كْ مْ وْ هْ يْ ٭

## تختی نمبر نہم (۹) مشق حرکات

کھڑی زبر، کھڑی زیر، اُلٹا پیش، مدّ ولین وتنوین

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اٰمَنَ | اٰوٰی | اٰنِیَةٍ | اِلٰفِ | اَیْنَ |
| بِهٖ | جَآءَ | جِآئَ | جُوْعٍ | خَوْفٍ |
| خَیْرٌ | دٰوٗدُ | ذٰلِكَ | رَضُوْا | شَآءَ |
| مٰلِكِ | شَیْءٍ | طَغٰی | طَغَوْا | طَیْرًا |
| عَادٍ | عَلٰی | عَیْنٌ | فِیْهِ | قَالَ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| قَوْلٌ | كَانَ | كَيْدًا | كَيْفَ | لَوْحٍ |
| لَيْسَ | مَالًا | نَارًا | مَآءٍ | وَيْلٌ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| يَوْمٍ | يَرَهٗ | حَاسِدٍ | حَافِظٌ |
| دَافِقٍ | شَاهِدٍ | عَابِدٌ | عَآئِلًا |
| غَاسِقٍ | نَاصِرٍ | وَالِدٍ | اَعُوْذُ |
| اَكِيْدُ | يَخَافُ | يَدُهٗ | يُقَالُ |
| تُرَابًا | حِسَابًا | سُبَاتًا | سِرَاجًا |
| سَلٰمٌ | شِدَادًا | شَرَابًا | صَوَابًا |
| طَعَامٍ | عَذَابٌ | عَطَآءً | غُثَآءً |

| | | | |
|---|---|---|---|
| كِتٰبًا | كِرَامًا | لِبَاسًا | لِسَانًا |
| مَاٰبًا | مَتَاعًا | مُطَاعٍ | مَعَاشًا |
| مَفَازًا | مِهٰدًا | نَبَاتًا | وِفَاقًا |
| ثُبُوْرًا | رَسُوْلٍ | شُهُوْدٌ | قُعُوْدٌ |
| وُجُوْهٌ | اَثِيْمٍ | اَلِيْمٍ | بَصِيْرًا |
| خَبِيْرًا | رَحِيْقٍ | شَهِيْدٌ | عَظِيْمٍ |
| قَرِيْبًا | كَرِيْمٍ | مَجِيْدٌ | مُحِيْطٌ |
| نَعِيْمٍ | يَتِيْمًا | يَسِيْرًا | رُوَيْدًا |
| قُرَيْشٍ | عَيْشَةٍ | اَلْمَوْءٗدَةُ | |

| | | |
|---|---|---|
| مَوْضُوعَةٌ | مَوَازِيْنُهٗ | يَوْمَئِذٍ |

## تختی نمبر دہم (۱۰) سُکُون یعنی جَزم

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اَبْ | اِبْ | اُبْ | اَتْ | اِتْ |
| اُتْ | اَثْ | اِثْ | اُثْ | اَجْ |
| اِجْ | اُجْ | اَحْ | اِحْ | اُحْ |
| اَخْ | اِخْ | اُخْ | اَدْ | اِدْ |
| اُدْ | اَذْ | اِذْ | اُذْ | اَرْ |
| اِرْ | اُرْ | اَزْ | اِزْ | اُزْ |
| اَسْ | اِسْ | اُسْ | اَشْ | اِشْ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اُشْ | اَصْ | اِصْ | اُصْ | اَضْ |
| اِضْ | اُضْ | اَطْ | اِطْ | اُطْ |
| | اَظْ | اِظْ | اُظْ | اسی طرح آخر تک |

## تختی نمبر یازدہم (۱۱) مشق سکون

اَنْتَ اِهْدِ بَعْدُ بَطْشَ سَعْيَ

كُنْتُ لَسْتَ اَمْرِ بَرْدًا جَمْعًا

حَبْلٌ خُسْرٍ خَلْقًا سَبْحًا سَبْقًا

شَاْنٌ صُبْحًا ضَبْحًا عَبْدًا

عَدْنٍ عَشْرٍ عَصْفٍ غَرْقًا غُلْبًا

فَصْلٌ قَدْحًا قَضْبًا كَاْسًا كَدْحًا

لَغْوًا مِسْكٌ نَخْلًا نَشْطًا نَفْسٍ

نَفْعًا يُسْرًا اَبْقٰى تَرْضٰى تَنْسٰى

يَخْشٰى يَسْعٰى يَتْلُوْا يَدْعُوْا تَجْرِىْ

يَهْدِىْ يُغْنِىْ اَلْقَتْ اَمْهِلْ اِقْرَاْ

فَارْغَبْ فَانْصَبْ وَانْحَرْ اَخْرَجَ

اَرْسَلَ اَغْطَشَ اَفْلَحَ اَكْرَمَ

اَلْهَمَ اَنْشَرَ اَنْقَضَ دَمْدَمَ

عَسْعَسَ اَعْبُدُ نَعْبُدُ يَخْرُجُ

يَحْسَبُ يَشْرَبُ يَشْهَدُ تَرْهَقُ

تَعْرِفُ اُقْسِمُ يُبْدِئُ يُنْفَخُ

يَنْقَلِبُ يُوَسْوِسُ ثَقُلَتْ حُشِرَتْ

سُطِحَتْ كُشِطَتْ نُشِرَتْ

نُصِبَتْ اَثَرْنَ وَسَطْنَ فَرَغْتَ

تَاْتُوْنَ يُسْقَوْنَ يَفْعَلُوْنَ

يَعْمَلُوْنَ يَعْلَمُوْنَ يَضْحَكُوْنَ

يَكْسِبُوْنَ يَدْخُلُوْنَ يَنْظُرُوْنَ

تَعْبُدُوْنَ اَنْعَمْتَ اَنْذَرْنَا

| |
|---|
| اَنْزَلْنَا خَلَقْنَا رَفَعْنَا وَضَعْنَا |
| نُطْفَةٍ عِبْرَةٌ زَجْرَةٌ تَذْكِرَةٌ ج |
| مُسْفِرَةٌ مُؤْصَدَةٌ ○ مَسْغَبَةٍ |
| مَقْرَبَةٍ مَتْرَبَةٍ ج تَضْلِيْلٍ تَقْوِيْمٍ |
| تَكْذِيْبٍ تَسْنِيْمٍ ○ مِسْكِيْنًا |
| مَمْنُوْنٍ مَحْفُوْظٍ مَخْتُوْمٍ مَسْرُوْرًا ○ ط |
| مَشْهُوْدٍ اَبْوَابًا مَصْفُوْفَةٍ اَزْوَاجًا |
| اَشْتَاتًا اِطْعٰمٌ اَعْنَابًا اَفْوَاجًا |
| اَلْفَافًا ○ ط قُرْاٰنٌ اَلْحَمْدُ وَالْفَجْرِ |

وَالْفَتْحُ وَالْعَصْرِ مِنَ الْمُعْصِرٰتِ

مَعَ الْعُسْرِ مَا الْقَارِعَةُ ۝ وَاِذَا

الْمَوْءٗدَةُ يَنْظُرُ الْمَرْءُ كَالْفَرَاشِ

الْمَبْثُوْثِ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝

لَيْلَةُ الْقَدْرِ اَخْرَجَتِ الْاَرْضُ

مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ عِنْدَ ذِى

الْعَرْشِ يَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝ وَهُوَ

الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ

تَقۡوِيۡمٍ ۝ اَعۡطَيۡنٰكَ الۡكَوۡثَرَ ۝ آلۡئٰنَ

## تختی نمبر دوازدہم (۱۲) تشدید

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اَبَّ | اَبِّ | اَبُّ | اِبَّ | اِبِّ |
| اِبُّ | اُبَّ | اُبِّ | اُبُّ | اَبًّا |
| اَبٍّ | اَبٌّ | اِبًّا | اِبٍّ | اِبٌّ |
| اُبًّا | اُبٍّ | اُبٌّ | اَتَّ | اَتِّ |
| اَتُّ | اِتَّ | اِتِّ | اِتُّ | اُتَّ |
| اُتِّ | اُتُّ | اَتًّا | اَتٍّ | اَتٌّ |
| اِتًّا | اِتٍّ | اِتٌّ | اُتًّا | اُتٍّ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اُتُّ | اَتَّ | اَتِّ | اَتُّ | اِتَّ |
| اِتِّ | اِتُّ | اُتَّ | اُتِّ | اُتُّ |
| اَتًّا | اَتٍّ | اَتٌّ | اِتًّا | اِتٍّ |
| اِتٌّ | اُتًّا | اُتٍّ | اُتٌّ | اَجَّ |
| اَجِّ | اَجُّ | اِجَّ | اِجِّ | اِجُّ |
| اُجَّ | اُجِّ | اُجُّ | اَجًّا | اَجٍّ |
| اَجٌّ | اِجًّا | اِجٍّ | اِجٌّ | اسی طرح آخر تک |

## تختی نمبر سِیزدہم (۱۳) مشق تشدید

بُرِّزَ حُصِّلَ صَدَّقَ عَدَّدَ قَدَّرَ

كَذَّبَ نَعَّمَ يَظُنُّ يَحُضُّ جَنَّةٍ

ذَرَّةٍ قُوَّةٍ كَرَّةٌ سُعِّرَتْ قَدَّمَتْ

كَذَّبَتْ زُوِّجَتْ سُجِّرَتْ فُجِّرَتْ

سُيِّرَتْ عُطِّلَتْ كُوِّرَتْ تَطَّلِعُ

تُحَدِّثُ نُيَسِّرُ هُمُ الْبَيِّنَةَ

قَيِّمَةٌ عَشِيَّةً مُذَكِّرٌ اَيَّانَ

اِيَّاكَ لِلّٰهِ تَجَلّٰى تَصَدّٰى تَزَكّٰى

تَوَلّٰى تَوَّابًا ○ ثَجَّاجًا غَسَّاقًا

فَعَّالٌ كِذَّابًا وَهَّاجًا مُمَدَّدَةٍ ○

مُكَرَّمَةٍ مُطَهَّرَةٍ وَ السَّمَآءِ

وَالتَّرَآئِبِ وَالنّٰشِطٰتِ وَ النّٰزِعٰتِ

وَالسّٰبِحٰتِ فَالسّٰبِقٰتِ فَالْمُدَبِّرٰتِ

تُبْلَى السَّرَآئِرُ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ

بِالْخُنَّسِ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۙ

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ

## تختی نمبر چہار دہم (۱۴) مشق تشدید مع سُکون

مَرُّوْا رَبِّيْ مُدَّتْ حُقَّتْ خَفَّتْ

تَبَّتْ تَخَلَّتْ قَدَّمَتْ وَالصُّبْحِ

وَالشَّمْسِ وَالشَّفْعِ بِالصَّبْرِ ○

وَالصَّيْفِ وَاللَّيْلِ وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ

سِجِّيْلٍ سِجِّيْنٌ مُنْفَكِّيْنَ فَاِنَّ

الْجَنَّةَ لِحُبِّ الْخَيْرِ اِذَا السَّمَآءُ

انْشَقَّتْ مَا الطَّارِقُ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ○ لا

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ○ صلے

## تختی نمبر پانزدہم (۱۵) تشدید مع تشدید

يَزَّكّٰى يَذَّكَّرُ اَلْمُدَّثِّرُ اَلْمُزَّمِّلُ

عِلِّيِّيْنَ ○ ط عِلِّيُّوْنَ ○ ط اِنَّ الَّذِيْنَ

اِلَّا الَّذِیْنَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ

فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ ۝ؕ

## تختی نمبر شانزدہم (۱۶) تشدید بعد حروفِ مدّہ

ضَآلًّا دَآبَّةٍ حَآجَّكَ حَآجُّوْكَ

لَضَآلُّوْنَ وَلَا الضَّآلِّیْنَ اَتُحَآجُّوْٓنِّیْ

وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ وَالصّٰٓفّٰتِ جَآءَتِ

الصَّآخَّةُ ۝ؗ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ

الْكُبْرٰی ۝ؕ

## خاتمہ اجرائے قواعد

جَزَآءً الْمَلٰٓئِكَةُ اِنَّآ اَعْطَيْنَا اِلَيْنَآ

اِيَابَهُمْ ○ۙ خَيْرًا يَّرَهٗ ○ؕ شَرًّا يَّرَهٗ ○

مِيْقَاتًا يَّوْمَ فَمَنْ يَّعْمَلْ يَوْمَئِذٍ

يَّصْدُرُ النَّاسُ مِنْ رَّبِّكَ رَسُوْلٌ

مِّنَ اللّٰهِ صُحُفًا مُّطَهَّرَةً صَفًّا ۙقؕ لَّا

يَتَكَلَّمُوْنَ قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ

اَبْصَارُهَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ○ۙ وَّاَنْزَلْنَا

اَكْلًا لَّمًّا ○ۙ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا

جَمًّا ○ؕ غُثَآءً اَحْوٰى ○ؕ مُّعْتَدٍ اَثِيْمٍ

اِذَا تُتْلٰی نَارًا حَامِيَةً ۝ۙ تُسْقٰی مِنْ

عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝ؕ مَنْ بَخِلَ لَيُنْۢبَذَنَّ

مِنْۢ بَعْدِ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ لَنَسْفَعًاۢ

بِالنَّاصِيَةِ بِذَنْۢبِهِمْ مُطَهَّرَةٍۢ ۝ۙ

بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ كِرَامٍۢ بَرَرَةٍ ۝ؕ هُمْ

فِيْهَا لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝ اِنَّ

رَبَّهُمْ بِهِمْ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ مِمَّ اَللّٰهُمَّ

تَمَّتْ بِالْخَيْرِ

# المصطفیٰ ﷺ مرکز کے اغراض و مقاصد

| خدمت مخلوق خدا کی | محبت و اطاعت مصطفیٰ ﷺ کی | عبادت خدا کی |
| --- | --- | --- |
| اِرۡحَمُوۡا مَنۡ فِی الۡاَرۡضِ یَرۡحَمۡکُمۡ مَّنۡ فِی السَّمَآءِ<br>ترجمہ۔تم زمین والوں پر رحم کرو آسمان والا تم پر رحم کرے گا (بخاری) | قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ<br>ترجمہ۔اے نبی ﷺ! آپ ان سے کہہ دیں کہ اگر تم اللہ سے محبت کرتے ہو تو میری اتباع کرو (آل عمران ۳۱) | وَاعۡبُدُوا اللّٰہَ وَلَا تُشۡرِکُوۡا بِہٖ شَیۡـًٔا<br>ترجمہ۔اور صرف اللہ کی عبادت کرو اور اس کے ساتھ کسی کو شریک نہ بناؤ (سورۃ النساء ۳۶) |

## جو کام زیادہ کرنے ہیں

☆ **قرآن و سنت پر عمل اور دعوت:** ترجمہ۔اور جو شخص اللہ اور اس کے رسول ﷺ کی اطاعت کرتا رہے گا اور اللہ سے ڈرتا رہے گا اور پرہیزگاری اختیار کرے گا تو ایسے ہی لوگ کامیاب ہیں۔(النور ۵۲)

☆ **مسلم امہ سے فرقہ پرستی و تعصبات کے خاتمے کی کوشش:** ترجمہ۔تم سب مل کر اللہ کی رسی کو مضبوطی سے تھام لو اور تفرقے میں مت پڑو۔(آل عمران)

☆ **فلاح اتحاد امت کی کوشش:** ترجمہ۔تم میں سے کوئی اس وقت تک مومن نہیں ہو سکتا جب تک تم اپنے بھائی کیلئے وہ پسند نہ کرو جو اپنے لیے پسند کرتے ہو۔(مسلم)

☆ **فکر آخرت:** ترجمہ۔جو آخرت کی کھیتی کا طالب ہے ہم اس کی کھیتی میں ترقی دیں گے۔(الشوریٰ ۲۰)

## جو کام بالکل نہیں کرنے

☆ **شرک:** ترجمہ۔کہہ دو کہ مجھے حکم دیا گیا ہے کہ اللہ کی عبادت کروں اور اس کے ساتھ شریک نہ کروں۔(الرعد ۳۶)

☆ **بدعت:** ترجمہ۔ہر بدعت گمراہی ہے اور ہر گمراہی جہنم میں لے جائے گی۔(مسلم)

☆ **حقوق العباد میں کوتاہی:** ترجمہ۔اور والدین کے ساتھ احسان کرو اور رشتہ داروں، یتیموں، مساکین اور قرابت دار ہمسایہ اور غیر قرابت دار ہمسایہ۔(النساء ۳۶)

## جن کا ادب کرنا ہے

☆ **اہل بیت اطہارؓ:** ترجمہ۔رسول اللہ ﷺ نے فرمایا دوست رکھو اللہ تعالیٰ کو اس لیے کہ وہ تم کو نعمتیں کھلاتا ہے اور دوست رکھو مجھے اللہ کیلئے اور دوست رکھو میرے اہل بیت کو میرے لیے۔(ترمذی)

☆ **صحابہ کرامؓ:** ترجمہ۔مہاجر و انصار میں سبقت لے جانے والے اور سب سے پہلے ایمان لانے والے جنہوں نے نیکی میں (ان کی) اتباع کی۔اللہ سب سے راضی ہو گیا اور وہ اللہ سے راضی ہو گئے۔(التوبہ ۱۰۰)

☆ **اولیاء کرام:** ترجمہ۔اللہ کے نیک بندوں میں بعض ایسے بھی ہیں کہ اگر اللہ پر قسم کھا لیں تو اللہ پوری کر دیتا ہے۔(مسلم)

☆ **علماء کرام:** ترجمہ۔علماء انبیاء کے وارث ہیں۔(ابوداؤد)

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا

اور اللہ کی رسی کو مل کر مضبوطی سے
تھام لو اور تفرقے میں مت پڑو

بسم اللہ الرحمن الرحیم

لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ

مَن كَانَ فِي حَاجَةِ أَخِيهِ كَانَ اللّٰهُ فِي حَاجَتِهِ

جو شخص اپنے بھائی کی حاجت روائی میں
لگا رہے گا اللہ اسکی حاجت پوری کرے گا



# المصطفیٰ ﷺ مرکز

- ★ قرآن وسنت کی دعوت اور بالا دستی ، امت مسلمہ سے فرقہ پرستی اور مسلکی تعصب کے خاتمے اور اتحاد وفلاح کا مرکز۔
- ★ نیز تعلیم مصطفیٰ ﷺ کی کتب فی سبیل اللہ حاصل کرنے کے لیے رابطہ کریں۔


چک شاہ پور، 2 کلومیٹر ہرن مینار موٹروے انٹرچینج، حافظ آباد روڈ، شیخوپورہ

Cell: 0321-4110922 , 0300-5115922
0343-4110922